

ग्रंथकार, साहित्यकार, स्वर्णकार 3. एक शब्द जो वर्णमाला के अक्षरों के आगे लग कर, उनका स्वतंत्र बोध करता है जैसे- चकार, मकार आदि 4. एक शब्द जो अनुकृतिमूलक ध्वनि के साथ लगकर उसका संज्ञावत् बोध कराता है जैसे- फूत्कार, चीत्कार, फुफकार, टंकार, फटकार 5. बर्फ से ढँका पहाड़ हिमालय 6. पूजा की बलि 7. पति 8. चेष्टा।

कार पुं. (फा.) 1. कार्य, धंधा यो. कारगुजारी, कारबार, कार्रवाई 2. एक प्रत्यय जो फारसी शब्दों के अंत में जुड़ता हो जैसे- काश्तकार।

कारक वि. (तत्.) करनेवाला जैसे- दुःखकारक, वातकारक पुं. (तत्.) व्या. संज्ञा या सर्वनाम शब्द की वह अवस्था जिसके द्वारा किसी वाक्य में उसका क्रिया के साथ संबंध प्रकट होता है कारक छह हैं- कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, अधिकरण।

कारकदीपक पुं. (तत्.) काव्य में वह अर्थालंकार जिसमें कई एक क्रियाओं का एक ही कर्ता वर्णन किया जाए। जैसे- इत आवति चलिजात उत चलन छ सातक हाथ। चढ़ी हिंडोरे सी रहे लगी उसासनि साथ (बिहारी)।

कारकुन पुं. (फा.) 1. किसी के बदले काम करनेवाला, प्रबंधकर्ता 2. कारिंदा।

कारखाना पुं. (फा.) 1. वह स्थान जहाँ व्यापार के लिए कोई वस्तु बनाई जाती है जैसे- छापाखाना, बूचड़खाना 2. कारबार, कामकाज, व्यवसाय जैसे- आज कल महाविद्यालय सफेदपोश बाबुओं को ढालने के कारखाने हो गए हैं 3. घटना, मामला 4. क्रिया।

कारखानेदार पुं. (फा.) कारखाने का मालिक।

कारगर पुं. (फा.) 1. प्रभावोत्पादक, असरदार जैसे- मैंने इस मामले में कई उपाय किए किंतु वे कारगर नहीं हो सके।

कारगुजारी स्त्री. (फा.) मुस्तैदी और होशियारी से काम करना, कर्तव्यपालन, होशियारी।

कारचोब पुं. (फा.) 1. लकड़ी का एक चौखटा जिस पर कपड़ा तानकर जरदोजी या कसीदे का काम बनाया जाता है, अड़्डा 2. जरदोजी का काम करनेवाला, जरदोज 3. गुलकारी का काम जो जरी के तारों को लेकर लकड़ी के चौखटे पर बनाया जाता है।

कारचोबी स्त्री. (फा.) जरदोजी, गुलकारी, कशीदाकारी।

कारज पुं. (तत्.) कार्य। दे. कार्य।

कारट्रिज पुं. (अं.) दफ्ती, टीन, तॉबे आदि का बना हुआ वह आवरण जिसके अंदर बंदूक में रखकर चलाई जानेवाली गोली या छर्छा रहता है, कारतूस।

कारटून पुं. (अं.) वह उपहासपूर्ण कल्पित चित्र जिससे किसी घटना या व्यक्ति के संबंध में किसी गूढ़ रहस्य का ज्ञान होता है, व्यंग्य-चित्र।

कारटूनिस्ट पुं. (अं.) व्यंग्य चित्रकार, कार्टून बनाने वाला।

कारड पुं. (अं.) दे. कार्ड।

कारण पुं. (तत्.) 1. हेतु, वजह, संबंध।

कारणमाला स्त्री. (तत्.) 1. हेतुओं की श्रेणी 2. काव्य में एक अलंकार जिसमें किसी कारण से उत्पन्न कार्य पुनः किसी अन्य कार्य का कारण होता हुआ वर्णन किया जाए।

कारणशरीर पुं. (तत्.) 1. वेदांत के अनुसार सुषुप्त अवस्था का कल्पित शरीर 2. सूक्ष्मशरीर और स्थूल शरीर से भिन्न शरीर, नैमित्तिक शरीर, लिंग शरीर।

कारतूस पुं. (पुर्त.) पीतल, दफ्ती आदि की बनी खोली जिसमें छर्छा और बारूद भरी रहती है और उसके एक सिरे पर टोपी लगी रहती है, इसे बंदूक, रिवालवर, राइफल आदि में भरकर चलाते हैं।

कारबन पुं. (अं.) भौतिक सृष्टि के मूल तत्वों में से एक, यह कार्बोनिक एसिड (गैस), कोयला, हीरा आदि में होता है।